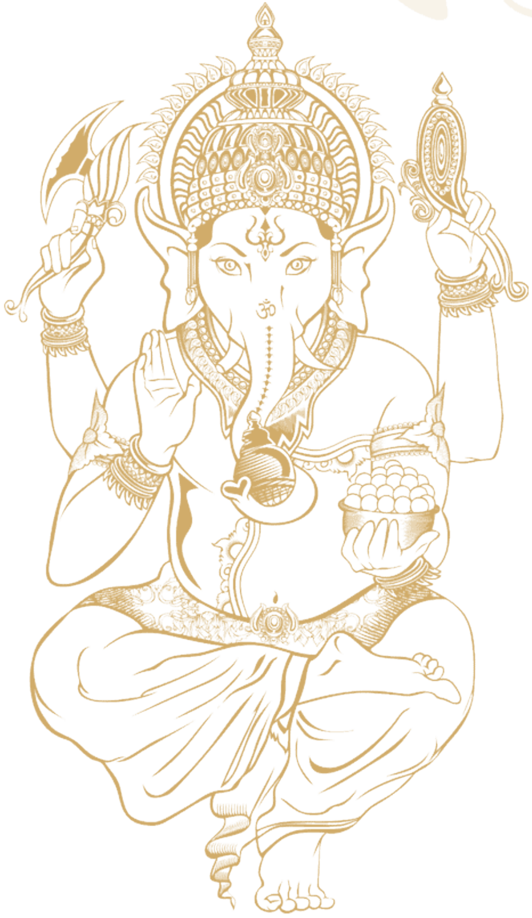

14 Feb 2026

11:24 AM

Kathmandu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121276701

तिथि 14/02/2026 **समय** 11:24:00 **वार** शनिवार **स्थान** Kathmandu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:26
अक्षांश 27:05:00 उत्तर **रेखांश** 85:04:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 86:15:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	20:56:19 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:14:10 घं	योनि	वानर
सूर्योदय	06:42:30 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	17:55:39 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मूषक
मास	फाल्गुन	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	अग्नि
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	फा-फारुख
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा	पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
योग	सिद्धि	होरा	शुक्र
करण	तैतिल	चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी		योगिनी	
शुक्र 5वर्ष 6मा 0दि		सिद्धा 1वर्ष 11मा 3दि	
शुक्र		सिद्धा	
14/02/2026		14/02/2026	
17/08/2031		18/01/2028	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	14/02/2026		14/02/2026
शनि	17/08/2027	भद्रिका	18/11/2026
बुध	16/06/2030		
केतु	17/08/2031	उल्का	18/01/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:32:56	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			01:18:22	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	शत्रु राशि	1.80	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			22:59:55	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.14	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	22:53:29	मक	श्रवण	4	चंद्र	सूर्य	उच्च राशि	1.10	अमात्य	भ्रातृ	विपत
बुध			17:54:21	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	सम राशि	1.10	मातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु	व		21:51:54	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.21	भ्रातृ	धन	साधक
शुक्र			10:32:33	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.24	पुत्र	कलत्र	प्रत्यारि
शनि			05:48:04	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.25	ज्ञाति	आयु	वध
राहु	व		14:47:27	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		14:47:27	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

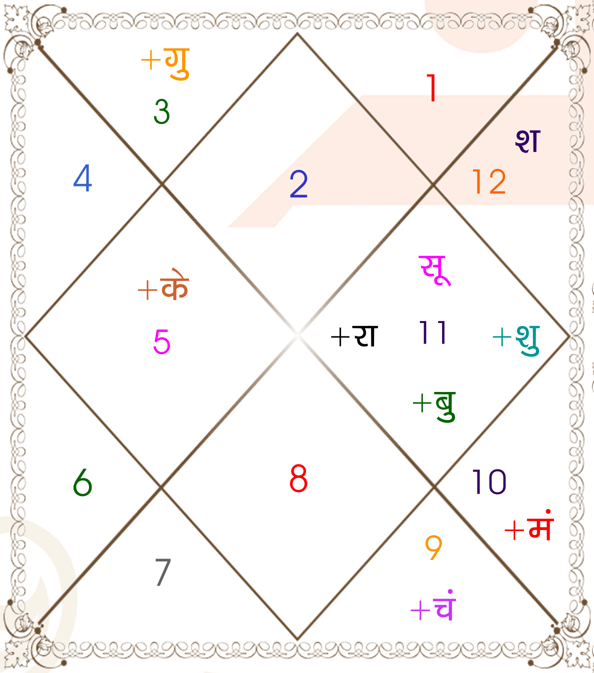

चन्द्र कुंडली

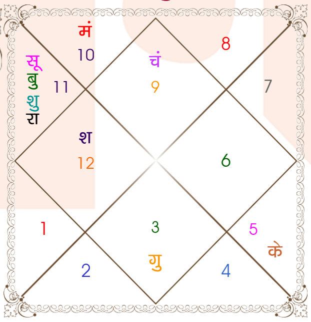

नवमांश कुंडली

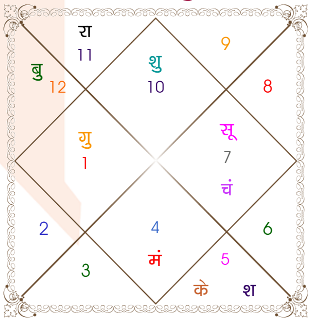

सर्वाष्टकवर्ग

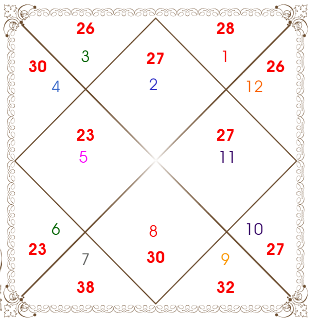

दशमांश कुंडली

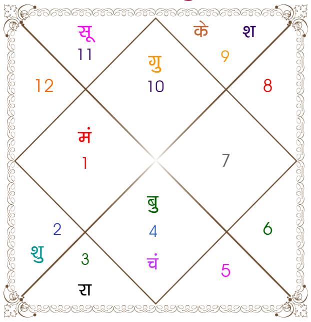

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर "फ" या "फा" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में समस्त सुखैश्वर्य का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आप अन्य लोगों से अत्यन्त ही मधुर तथा शालीनता के साथ व्यवहार रखेंगे जिससे आपसे सभी प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने सम्भाषण में भी प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे। चरित्र से आप उत्तम रहेंगे। धनधान्य से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सामान्यतया इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। साथ ही आपकी पानी पीने की इच्छा भी अधिक होगी तथा बार बार इसका उपयोग करेंगे।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सुन्दर सुशील तथा गुणवती स्त्री की पत्नी के रूप में प्राप्ति होगी जो आपको समस्त प्रकार से सुख एवं आनन्द प्रदान करने में समर्थ रहेगी। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त होंगे। आप हमेशा स्थिर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। अतः आपकी मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं रहेगा तथा जो भी मित्र होंगे वे सभी बुद्धिमान तथा गुणवान होंगे। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य भी स्थिर रूप से आपके पास रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही अन्य जनों के उपकार करने की भावना विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल परिचितों के अतिरिक्त अपरिचित जनों की भी आप यत्न पूर्वक भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। इससे आपके सामाजिक सम्मान तथा स्थिति में नित्य अभिवृद्धि होती रहेगी। भाग्य सर्वथा आपके साथ रहेगा तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप अल्प परिश्रम से ही पूर्ण करने में सक्षम रहेंगे तथा समाज के

सभी वर्गो को अपना सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे। अतः सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करने में आप दक्षता प्राप्त होंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप के आचार विचार उत्तम रहेंगे तथा समाज में सब प्रकार से आदरणीय रहेंगे। आपका स्वभाव हमेशा शान्त रहेगा। अतः किसी भी विषम परिस्थितियों में आप उत्तेजित नहीं होंगे तथा शान्तिपूर्वक उसका समाधान करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीङित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

धनु राशि में जन्म लेने के कारण आपका गला एवं मुखभाग दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आपके कान, ओंठ, दान्त भी स्थूल रहेंगे। तथा भुजाएं पुष्ट रहेंगी। आप को अपने पिता से पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी। जिसका आप जीवन में सुखपूर्वक उपभोग कर सकेंगे। आपके मन में दान शीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे फलतः कविता सृजन में आपको सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो सकती हैं। आप एक बलशाली पुरूष होंगे तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में भी आप निपुण रहेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा

सामाजिक जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे चित्रकला आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। आप स्वभाव से गम्भीर होंगे तथा गम्भीरता तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन श्रद्धाभाव रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान भी स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। आपके अपने बन्धुवर्ग से संबंध सामान्य तथा औपचारिक रहेंगे। आपको केवल प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही वश में किया जा सकेगा। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोलाकृति लिए अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होंगे। साथ ही हाथ एवं कन्धे भी लम्बाई में अधिक हो सकते हैं। आपका सीना विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के समीप निवास करना या भ्रमणादि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील ही रहेंगे। आप कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में हमेशा सफल रहेंगे। साथ ही आप हमेशा हृदय से प्रसन्नचित रहेंगे। अनावश्यक चिन्ता या दुःख आप नहीं करेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेगी। आप में कृतज्ञता का गुण विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका आभार मानेंगे तथा हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप बोलने में भी निपुण रहेंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आसानी से सिद्ध कर लेंगे। आप एक त्यागी पुरुष होंगे तथा जीवन में कई बार इस प्रवृति का पालन भी करेंगे। आपमें साहस तथा बहादुरी का भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप समस्त कार्यों को निर्भीकता से सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्राय असमर्थ ही रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोंगों के प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।

प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽशिवभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में दक्ष रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र तथा सुशील रहेगा एवं आपका चरित्र भी निर्मल एवं अनुकरणीय रहेगा साथ ही आप स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से किसी के भी सामने कह देंगे। पीठ पीछे कहने की आपकी आदत नहीं होगी। इसके साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा सुडौलता से युक्त रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में सर्वमान्य या श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी कुलीन जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकारी तथा इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर तथा साहसी व्यक्ति होंगे। सत्य के प्रति आपकी हार्दिक निष्ठा रहेगी। तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप सत्व गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे। आप एक दयालु पुरूष होंगे तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए आपके मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान तथा धनवान पत्नी से युक्त होकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। विभिन्न प्रकार के नाटकों के करने में भी आप रूचि शील रहेंगे तथा हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने संवादों में प्रयोग करेंगे। आपका शरीर स्थूल होगा तथा कभी कभी आपके आपके किसी कार्य से आपके पूर्ण परिवार तथा कुल को परेशानी तथा कष्टानुभूति करनी पड़ सकती है।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रह कर आप समाज में एक श्रद्धेय तथा सम्मानीय व्यक्ति समझे जाएंगे। अपने बन्धु वर्ग में भी आप को श्रेष्ठता प्राप्त रहेंगे। साथ ही देवता, ब्राह्मणों तथा गुरूजनों के प्रति भी आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। जिसका आप समय समय पर अनुपालन भी करते रहेंगे। आप की चाल अत्यन्त ही आकर्षण तथा दर्शनीय होगी। परन्तु आप में सहन शक्ति का अभाव रहेगा। इससे कई बार आपको अनावश्यक रूप से मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरूष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यो तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अपनी इस प्रवृति का समय समय पर पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आप सादगी से जीवन व्यतीत करने में रूचिशील रहेंगे तथा अनावश्यक दिखावटीपन से आप दूर ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में एक महान विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव में कभी कभी चंचलता भी रहेगी। आप मिष्ठान प्रिय रहेंगे तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप धन के प्रति लोलुपता का प्रदर्शन भी करेंगे तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही अधीरता का परिचय देंगे। आपकी प्रवृति विवाद की ओर भी जागृत रहेगी अतः समय समय पर अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। काम की भी आप में प्रबलता रहेगी। आपकी सन्तान गुणवान एवं बुद्धिमान रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी तथा वीर पुरूष भी होंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थाई रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा प्रायः अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों

भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि कार्यो को शुभारम्भ न करें। अन्यथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फलों की ही प्राप्ति होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या प्रोन्नति में बाधा तथा अन्य कार्यो में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्यपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी एवं शुभ फलों में वृद्धि होगी जिससे आपकी समस्त विघ्न बाधाएं दूर होंगी एवं अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।